● पढ़ो और गाओ :

५. बंदर का धंधा

– नरेंद्र गोयल

जन्म : २१ अक्तूबर १९६३, पिलखुवा, गाजियाबाद (उ.प्र) **रचनाएँ :** गीत माला, गीतगंगा, गीतसागर, झूला झूलें, चींचीं चिड़ियाँ आदि। **परिचय :** नरेंद्र गोयल जी आप बाल मनोविज्ञान के ज्ञाता माने जाते हैं । आपने बालोपयोगी बहुत सारी रचनाएँ हिंदी जगत को दी हैं ।

प्रस्तुत कविता में कवि ने वनौषधियों द्‌वारा होने वाले पारंपरिक उपचारों; उसके प्रभावों पर हास्य के माध्यम से प्रकाश डाला है ।

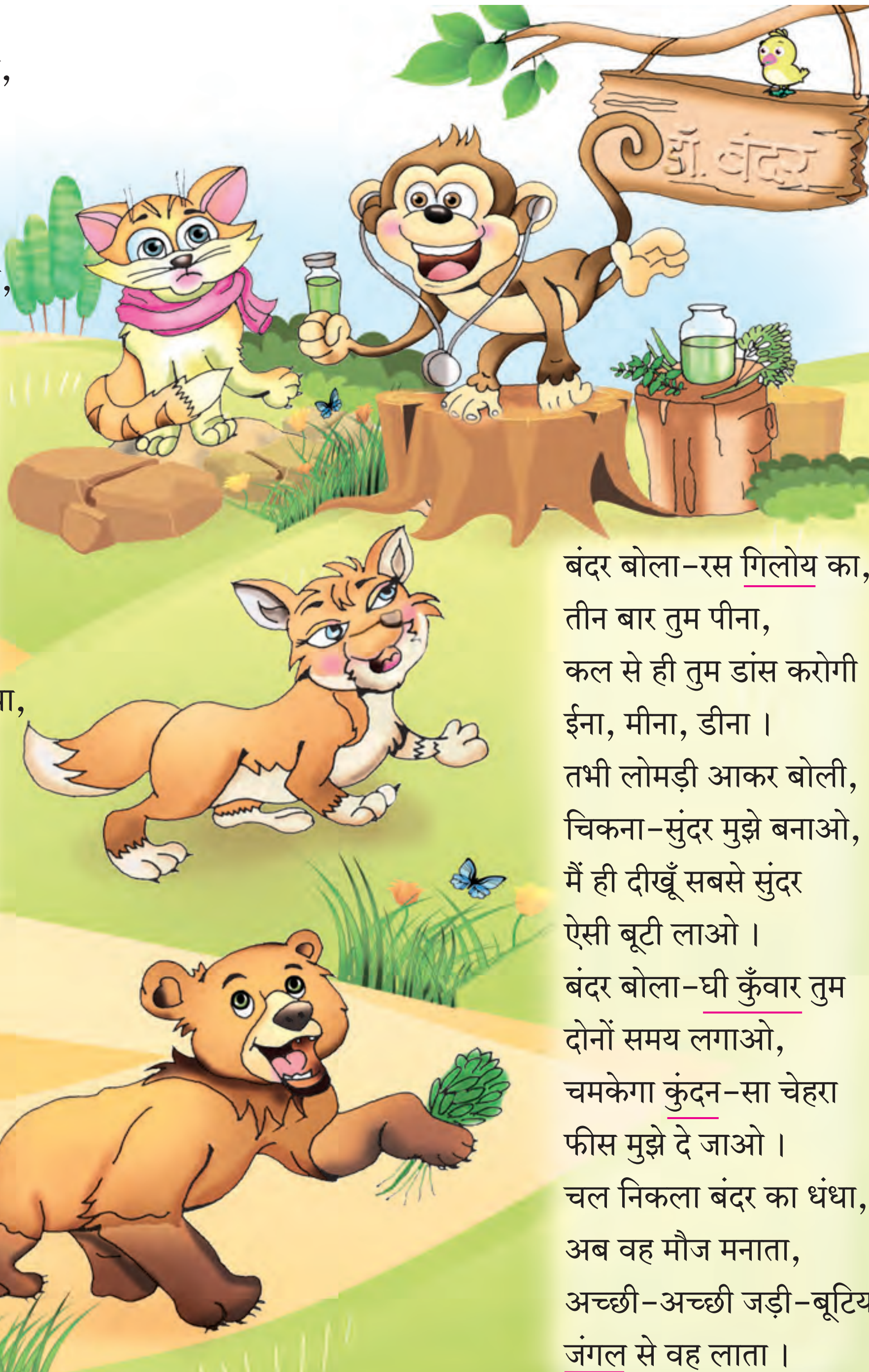

हाथ लगा बंदर के एक दिन,
टूटा-फूटा आला ।
झट बंदर ने पेड़ के नीचे,
कुरसी-मेज ला डाला ।
भालू आकर बोला-मुझको,
खाँसी और जुकाम,
बंदर बोला-तुलसी पत्ते,
पीपल की जड़ थाम ।
पानी में तुम इन्हें उबालो,
सुबह-शाम को लेना,
खाँसी जब छू-मंतर होए,
फीस तभी तुम देना ।
बिल्ली बोली-मुझको आया,
एक सौ चार बुखार,
मैं शिकार पर कैसे जाऊँ,
जल्दी इसे उतार ।

L2HD9H

बंदर बोला-रस गिलोय का,
तीन बार तुम पीना,
कल से ही तुम डांस करोगी
ईना, मीना, डीना ।
तभी लोमड़ी आकर बोली,
चिकना-सुंदर मुझे बनाओ,
मैं ही दीखूँ सबसे सुंदर
ऐसी बूटी लाओ ।
बंदर बोला-घी कुँवार तुम
दोनों समय लगाओ,
चमकेगा कुंदन-सा चेहरा
फीस मुझे दे जाओ ।
चल निकला बंदर का धंधा,
अब वह मौज मनाता,
अच्छी-अच्छी जड़ी-बूटियाँ,
जंगल से वह लाता ।

❑ विद्‌यार्थियों से कविता का साभिनय पाठ कराएँ । कविता के प्रसंगों का नाट्‌यीकरण कराएँ । शब्दयुग्मों की सूची बनवाएँ । जड़ी-बूटी से होने वाले लाभ पर चर्चा करें । हास्य कविताएँ पढ़वाएँ । रेखांकित किए शब्दों के अर्थ शब्दकोश से प्राप्त करने के लिए कहें ।